P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -6, ISSUE-2, November - 2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष एवं पारिवारिक सामंजस्यः रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियो–अभिभावको के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

निशा गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
महिला पी0 जी0 कालेज,
अमीनावाद लखनऊ

वालेन्तिना प्रिया
शोधकत्री
गृह विज्ञान विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

शोध क्षेत्र रायबरेली अध्ययनरत किशोरियों एवं उनके अभिभावको के परिवारिक सांमन्जस्य पर आधारित है। क्योंकि पीढ़ी अन्तराल और पीढ़ी – अन्तरा के बीच भारी सामाजिक परिवर्तन होता है इन समस्याओं को कई रूपो में पहचानकर उन समस्याओं को वर्तमान परिदृश्य में हल करने का सफल प्रयास किया जाता है, जिससे पीढ़ी अन्तराल संधर्ष सामान्य रूप से दिशा विहीन नहीं होता है यह अन्तर शहरी और ग्रामीण दोनो स्थानों पर अलग–अलग अन्तर स्थापित करते है। क्योकि शहरी अभिभावक अपनी किशोरी की और समाज की समस्याओं को हल करने में अहम भूमिका निभाते है। जबकि ग्रामीण अभिभावको में सामाजिक समस्या और किशोरी की समस्या को समझ नही पाते, परिणाम स्वरूप वे अनेक समस्याओं में पड़कर अपने – आपको जटिल से जटिल समस्यओं से घेर लेते है जो पीढ़ी अन्तराल समस्या का कारण बन जाता है।

मुख्य शब्द : समस्याओं का स्वरूप, अन्तरालगत, रायबरेली, किशोरी, अभिभावक, न्यादर्श, पीढ़ी, संघर्ष, सामाजिक, पारिवारिक, सामान्य।

प्रस्तावना

पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष एक या दो वर्ष की कहानी का शोध नहीं है। बल्कि यह संघर्ष कई पीढियों का संघर्ष ज्ञापित करता है। मानवीय सम्मान बड़ा ही रोचक एवं परिवर्तनकारी प्रतिक्रिया का सापेक्षवाद है, जिसके अधीन समाज एवं जीवन शैली से जुडी अनेक स्थितियाँ एवं परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उनमें नवीन आक्रामक परिवर्तन दिखाई देते है। जिससे भारतीय समाज भी अपने उद्देश्य से तौर तरीके परिवर्तन करता रहता है। अतीत का समाज जहॉ पुरातन कथा एवं प्राकृतिक नियमो अथवा निष्कर्ष के माध्यम से चलता था। जिसमें टकराव कम होते है लोगो में विश्वास प्रबल दावा करता था।[1] लेकिन कालन्तर में पीढ़ी अन्तरालगत सघर्ष अभिभावक एवं किशोरियो के बीच आक्रामक संघर्ष दिखाई देते है। शायद इसका तात्पर्य पीढ़ियों में परिवर्तन वैश्विक नीतियां इस्लामी या पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है जिसमें टकराव की स्थितिया अधिक प्रभाव डालती है प्रत्येक मनुष्य को उचित प्रकार का जीवन व्यतीत करने के लिये उसकी आवश्यकताओं और इच्छाओ की पूर्ति आवश्यक होती है जब मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति अवरोधित होती है। तो वह क्रोधित होकर वातावरण के विरूद्ध कार्य गलत किया करता है। किशोरी उम्र में यह गति और अधिक संघर्ष करती है। वे क्रोधित होकर अभिभावक के प्रति दुर्व्यहार करना वस्तुओं को तोड़ना बदले की भावना से, सामाजिक, पारिवारिक एवं सामान्य नियमों का उल्लंघन आदि कार्य करने लगती है। किशोरियों में स्वतन्त्रता की भावना अत्यन्त प्रबल होती है यदि उनके व्यवहार पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास किया जाता है। या कोई बाधा डाली जाती है तो वे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए और संघर्षमयी हो जाती है। किशोरियों के ऐसे व्यवहार से मालूम होता है। कि उनका जीवन चक्र इतनी तीव्रता से परिवर्तित हुआ है कि जीवन की परिभाषा ही बदल गयी है और भौतिकवाद और पश्चात सभ्यता के प्रभाव से रिश्ते बेमानी का रूप धारण करने लगे है। नयी एवं पुरानी पीढ़ी टकराव के कगार पर आ खडी हो गयी है। इस टकराव के जिम्मेदार कौन है ? आज की किशोर पीढ़ी या अभिभावक (पुरानी पीढी) जाहिर (सत्य है) इस संघर्ष के जिम्मेदार दोनों ही पीढ़ियों की सोच रहन – सहन और जीवन मूल्यों में जमीन और आसमान का अन्तर पाया जाता है।[2] जहॉ किशोर पीढ़ी अपने मे पारिवारिक मामले में दखलांदाजी बदार्शत नही करती है वही पुरानी पीढी को

उम्र के ढलने पर अपेक्षाये बढ़ जाती है उसी ओर यह वर्ग बहुत ज्यादा तनाव ग्रस्त चिन्तित और व्यथित है। समाज में इन कारणो को जानने का प्रयास ही नही किया जाता है जिनकी वजह से किशोरियाँ पीढ़ी ग्रस्त है उनकी क्या समस्याये है ? वे समस्याये किन कारणों से है ? उनका क्या निदान है ? इन सबका सामाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गहन अध्ययन होना आवश्यक है। यह समस्या पारिवारिक सामुदायिक एवं सामान्य सामाजिक स्तरो पर पायी जाने वाली एक समस्या है इस समस्या का इतिहास अधिक पुराना नहीं है लेकिन कुछ विद्वानो का कहना है कि यह समस्या प्राचीन युग में न के बराबर थी। क्योकि पीढ़ी अन्तरालगत का अर्थ दो पीढियों में पाये जाने वाले अन्तराल है उदाहरण तथा आपके हम आयु एक पीढ़ी के है जबकि आपके अभिभावक दूसरी पीढी के है।[3]

शोध का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियों (14 से 17 वर्ष) की सामाजिक परिवारिक एवं सामान्य समस्या के माध्यम से किशोरियो एवं अभिभावको को विक्षिप्त करती है। इन दोनो की ऐसी स्थिति केवल सामाजिक जटिलताओं के कारण ही घटित होती है। अतः इन घटनाओं का विकराल रूप सामाज में न दिखाई दे इसी वजह से शोध का उद्देश्य गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। उद्देश्य शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है उत + दिश अर्थात उत का अर्थ होता है "उत्कर्ष", दिश का अर्थ होता है 'दिशा' अर्थात ऐसा मार्गदर्शन करना जो उत्कर्ष की ओर ले जाये। जान डीयू ने कहा है कि जो लक्ष्य का ध्यान करके किया जाता है। वह सार्थक होता है। उन्हीं के अर्थो के अनुसार कार्य करना अन्य वस्तुओं में अर्थ खोजना। वे पूर्ण लक्षित उद्देश्य को उचित दिशा में ले जाते है तथा उसे सफल बनाते है अच्छे उद्देश्य की खोज की तीन विशेषताये होती है।

1. अच्छा उद्देश्य वह होता है जो जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित होती है।
2. अच्छे उद्देश्य गतिशील होते है। ताकि वह जीवन की बदलती हुई परिस्थितियों से अनुकूल स्थापित हो सके।
3. अच्छा उद्देश्य वह है जो हमारे समक्ष्य कार्य यह करने के लिए विभिन्न अवसर प्रदान करते है। अर्थात हमें निर्जीवता न प्रदान करे बल्कि सजीवता प्रदान करे एवं क्रियाशील बनाये।[4]

अतः इस शोधपत्र का उद्देश्य पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष पारिवारिक सामांजस्य हेतु रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियॉ (14–17) वा उनके अभिभावको के समस्या के तीन आधारों का आकलन एवं परीक्षण प्राप्त करना है। वे तीन प्रमुख निम्न समस्याये है।

1. रायबरेली जिले की किशोरियों /अभिभावकों की सामान्य समस्या।
2. रायबरेली जिले की किशोरियों /अभिभावकों की पारिवारिक समस्या।
3. रायबरेली जिले की किशोरियों /अभिभावकों की सामाजिक समस्या।

आदि उपयुक्त समस्याओं का निदान तथा कारण जाना गया है।

साहित्यावलोकन

संघर्ष को एक मौलिक सार्वभौमिक सामाजिक प्रक्रिया माना गया है जो प्रत्येक समाज और काल में कम या अधिक मात्रा में पाया जाता है। पूर्णतया संघर्ष रहित समाज पाया जाना असंभव है संघर्ष सामाजिक संबन्धों में हर समय मौजूद रहता है यह जीवन की वास्तविकता है इसे अस्वाभविक नही माना जाता है। व्यक्ति और समूहो के बीच शारीरिक भावनात्मक सांस्कृतिक तथा व्यवहार सम्बंधित अन्तर पाये जाते है। ये भेद विरोध वैमनस्य और संघर्ष तक के लिए उत्तरदायी है व्यक्ति या किशोरियों का समूह अपने विरोधियों से घृणा करने लगता है इसके प्रति रोष व्यक्त करता है क्रोध प्रकट करता है जो कभी संघर्ष के रूप में बदल सकता है जब कोई किशोरी या किशोरियों का समूह अपने लक्ष्यों के प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा का मार्ग छोडकर हिंसा का सहारा लेती है और अपने अभिभावको को नुकसान पहुचाने उसे पराजित करने या समाप्त करने का प्रयास करती है। तो संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है जब अभिभावक के प्रति घृणा क्रोध के भाव बहुत तीव्र हो जाते है तो उसे उस पर आक्रमण करने और उसे हानि पहुचाने की इच्छा बलवती हो जाती है परिणामस्वरूप संघर्ष में साधनों का उतना ध्यान नहीं दिया जाता है जितना साध्य (लक्ष्य प्राप्त) कर। इसमें हिंसा के भय या बल के प्रयोग का सहारा लिया जाता है। संघर्ष का अर्थ स्पष्ट करते हुए "मैकाइवर" तथा पेज 2 में लिखा है सामाजिक संघर्ष में सभी क्रिया–कलाप सम्मिलित है जिसमें मनुष्य किसी भी उपदे्श्य के लिए एक – दूसरे के विरूद्ध लड़ते या विवाद करते है किशोर पीढ़ी तथा माता – पिता, शिक्षक आदि की बडी पीढी में अन्तर तथा संघर्ष के कारण किशोरियों में असंतोष पैदा होता है इन दोनो पीढियों के लक्ष्य मूल्य आदर्श सोच आदि में बडा अन्तर (भिन्नता) होती है पीढ़ी अन्तराल संघर्ष के विचारो (समस्याओं) को आगे बढ़ाते हुए मर्टन ने कहा है कि किशोरियो के अन्दर अनुशासनहीनता अधिक पायी जाती है। जिनकी व्याख्या कई प्रकार से की जाती है। समाज या परिवार में सांस्कृतिक नैसर्गिक लक्ष्य होना निश्चित होता है तथा उन लक्ष्यों की अवश्यकता को पूर्ण करने के लिए संस्थागत साधन होते है। जब कोई व्यक्ति अपने भिन्न लक्ष्यों का चयन करता है अथवा संस्थागत साधनो का प्रयोग नहीं करता है। तो ये अनुशासनहीनता है। तब अनुशासनहीनता इतनी अधिक हो जाती है। कि उसे नियन्त्रित करना कठिन हो जाता है। जो परिवार में विघटन तथा अव्यवस्था की स्थिति पैदा हो जाती है। सांस्कृतिक लक्ष्यो और संस्थागत साधनो के सन्दर्भ में किशोरी अनुशासनहीनता निम्न तीन प्रकार की स्थिति के रूप में हो सकती है।[5]

1. जब किशोरी सांस्कृतिक लक्ष्यों के लिए लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य लक्ष्यों का चयन करती है, परन्तु पूर्ति के लिए संस्थागत साधनों का चयन नहीं करती है तो अनुशासनहीनता होती है। समाज (परिवार) की संस्कृ ति के अनुसार तक्ष्यो इच्छाओं या अवश्यकताओं का चयन नहीं है क्योकि किशोरी ने अन्य लक्ष्यों का

चयन नहीं किया है जो संस्कृति के अनुसार मान्य नहीं है।

2. जब किशोरी सांस्कृतिक लक्ष्यों उद्देश्यों तथा आवश्यकताओ के अनुसार अपने लक्ष्यों तथा आवश्यकताओं का चुनाव करती है, परन्तु उसकी पूर्ति के लिए संस्थागत साधनों का चयन नहीं करती है बल्कि अन्य अमान्य साधनों के द्वारा अपने लक्ष्य को पूरा करती है तो यह भी अनुशासनहीनता है।
3. तीसरी प्रकार की अनुशासनहीनता वह है जिसमें किशोरी सांस्कृतिक लक्ष्यों तथा संस्थागत साधनों दोनो ही का परित्याग करके अपनी इच्छानुसार अन्य लक्ष्यो तथा अपरम्परागत साधनों का चयन करता है या अनुशासनहीनता अधिक विघटनकारी होती है किशोरी जब अपने लक्ष्यों तथा साधनों को अपनी क्षमता तथा पहुँच के बाहर पाती है, तो उससे अनुशासनहीनता करने के लिए विवश करती है अन्तरालगत पीढ़ी संघर्ष के लिए परिणामस्वरूप वैयक्तिक एवं पारिवारिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है इससे व्यक्ति में अलगाव की प्रवत्तियाँ विकसित होने लगती है साथ ही परिवार की स्थिरता पर भी इसका काफी गहरा असर पड़ता है तथा सदस्यो में मंतैक के अभाव में तनावपूर्ण स्थिति बनी रहती है अन्तरालगत पीढ़ी संघर्ष के परिणामस्वरूप अन्तता सामाजिक विघटन को प्रोत्साहन मिलता है। तथा आपसी सहयोग दूसरो के प्रति सदभावना एवं सहानभूति समाप्त होने लगती है इससे समाज में आदर्श विहीनता की स्थिति विकसित होने का खतरा पैदा हो जाता है पीढ़ी अन्तरालगत समाज की प्रगति को भी धीमा कर देती है। पीढ़ियों में पाया जाने वाला अविश्वास सामाजिक प्रगति पर बुरा प्रभाव डालता है तथा कल्याणकारी योजनाये ठीक प्रकार से लागू नही हो पाती है। इस प्रकार से किशोरियों और अभिभावको के बीच उत्पन्न संघर्ष कई रूपो में दिखाई देने लगता है।[6]

समस्याओं का स्वरूप

शोधपत्र में शोधमती ने किशोरियों और अभिभावको के मध्य अनेक समस्याओं का

स्परूप देखा हैं, लेकिन यहॉ भी सिर्फ तीन समस्याओं का शोधकर्ता ने गवेषणा की। जो निम्न समस्याये है।

1. रायबरेली जिले की किशोरी एवं अन्य अभिभावकों की सामाजिक समस्या।
2. रायबरेली जिले की किशोरी एवं उनके अभिभावकों की पारिवारिक समस्यायें।
3. रायबरेली जिले की किशोरी एवं उनके अभिभावकों की सामान्य समस्याओं का जिक्र किया गया है। अतः शोधकर्ता ने इन समस्याओं का स्वरूप प्रस्तुत किया है।

परिकल्पना

परिकल्पना शोधकार्य में शोधकत्री समस्याओं का मार्गदर्शन करती है, परिकल्पना निर्माण के शोध कार्य का क्षेत्र सुनिश्चित वास्तविक चयनित होता है। इससे समस्या से सम्बन्धित तत्व तथा चर स्पष्ट होते है परिकल्पना शोधकर्त्री को प्रदत्तो के संकलन तथा आकड़े निकालने में सहायक होती है।

अतः इस शोधपत्र मे परिकल्पना मुख्य रूप रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियों के सम्बन्ध में है जो निम्न है।[7]

1. रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियो /अभिभावको की सामाजिक समस्या।
2. रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियो /अभिभावको/पारिवारिक समस्या का समांजस्य।
3. रायबरेली जिले की अध्ययनरत किशोरियो /अभिभावको की सामान्य समस्याओं का समांजस्य।

आदि उपयुक्त समस्याओं का सामांजस्य निरीक्षण किया जायेगा।

सीमांकन

प्रस्तुत शोधकर्त्री ने अपने सीमित समय धन एवं साधन को दृष्टिगत करते हुये शोध कार्य का निम्न प्रकार से सीमांकन किया है।

1. शोध कार्य को केवल रायबरेली की अध्ययनरत किशोरिया/अभिभावको की समस्याओं में समांजस्य के तुलनात्मक अध्ययन पर कार्य किया गया है।
2. शोध कार्य को केवल रायबरेली जनपद जक सीमित रखा गया है।
3. शोधकर्त्री ने केवल (14 से 17) वर्ष की अध्ययनरत किशोरियों एवं उनके अभिभावको को चयनित किया है।

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोधकर्त्री ने रायबरेली जिले के अन्तर्गत अने वाले 6 माध्यमिक बालिका (किशोरी) विद्यालयों में अध्ययनरत 150 किशोरियां एवं उनके 150 अभिभावको का चुनाव याचिक (रैन्डम) से किया गया है।[7]

शोध उपकरण

1. समायोजन सूची (मैनुअल) डा0 बी श्रीवास्तव एवं डा0 गोविन्द तिवारी मनोविज्ञान विभाग आगरा
2. संजय वोरा (2011) मल्टीडाईमेन्शनल ऐसेसमेन्ट आफ पर्सनालटीय, नई दिल्ली
3. स्वनिर्मित प्रश्नावली।

बिना उपकरणों के माध्यम से किसी भी शोध का निर्माण नही किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य वे तीन समस्याओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध समस्या के प्रकार मुख्य रूप से तीन प्रकार से पाया गया। जो सामाजिक समस्यायें, पारिवारिक समस्याये तथा सामान्य समस्याओं के अर्न्तगत है। जबकि ग्रुप दो अर्थात अभिभावक ग्रुप को भी दो भागों में विभाजित किया गया है ग्रामीण अध्ययनरत किशोरियों के अभिभावक जिनकी संख्या (75) जबकि शहरी अध्ययनरत किशोरियों के अभिभावक जिनकी संख्या (75) है इस प्रकार से किशोरी और अभिभावक 150/150 की संख्या में (विभाजन) है कुल मिलाकर संख्या/प्रतिदर्श 300 ही है। इस शोध की विशेषता यह की प्रश्नावली स्वयं शोधकर्त्री ने स्वयं निर्मित किये है लेकिन इनकी सभ्यता को परखने के लिये प्रो0 संजय गोरा (सांख्यकीय विधि) का सहारा लिया है इस शोध में कुल जनसंख्या

(किशोरी/अभिभावक) 150/150 है जबकि प्रश्नों की कुल संख्या = 25 है।[8]

प्रश्नों की प्रकृति सामान्य समस्या के रूप में = 8
पारिवारिक समस्या के रूप में = 11
सामाजिक समस्या के रूप में = 6

25 प्रश्न निर्धारित किये है। प्रश्नों का स्परूप दोनो ग्रुपो के लिए सामान है, लेकिन उत्तर प्रक्रिया अलग–अलग होगी। जिसमें शहरी और ग्रामीण किशोरियों/अभिभावकों के स्वरूप का ध्यान रखा गया है। प्रश्नावली वली की प्रकृति लघु है जिसका उत्तर है अथवा न (Yes/No) पर आधारित है। हॉ कि लिए (Yes) तथा न के लिए (No) लगाया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण के अन्तर्गत प्रस्तुत शोधपत्र प्रदत्तों का विश्लेषण उद्देश्यों पर आधारित है किशोरी/अभिभावकों जो शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरी (14 से 17) वर्षीय किशोरियाँ एवं उनके अभिभावको में सामाजिक पारिवारिक एवं सामान्य समस्याओं का सामांजस्य योग्यता परीक्षण द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों की सहृयता से मध्य मान मानक विचलन सह सम्बन्ध उनका t- test परीक्षण द्वारा प्रदत्तो का विश्लेषण कर उनका सारणीयन किया गया है।[9]

परिणाम एवं विश्लेषण

शोधपत्र में प्राप्त अध्ययनरत प्रथम उद्देश्य किशोरियों के मन में उत्पन्न विस्तरीय समस्या, सामान्य पारिवारिक एवं सामाजिक समस्या का निदान किया है। इस तुलना के लिए मध्यमान(M) मानक विचलन (S.D.) आदि का सहारा लिया गया है। प्रथम रूप

ग्रुप सभी (Group All)

1. ग्रामीण अभिभावक
2. शहरी अभिभावक
3. ग्रामीण किशोरी
4. शहरी किशोरी

इस प्रकार ग्रुप एक में (1, 3)

1 = ग्रामीण अभिभावक
3 = ग्रामीण किशोरीं

ग्रुप दो में (2, 4) के सभी समस्याओं के सामांजस्य का तुलनात्मक अध्ययन करके आकड़ों की प्राप्त होगी।

ग्रुप प्रथम के लिए (1, 3)

T – Test Group = Group All (1, 3)

तुलना = सामान्य, पारिवारिक एवं सामाजिक
मानक (Criteria) = CI (.9500) सत्यता का मानक

इस प्रकार प्रथम ग्रुप का परीक्षण करने में निर्धारित आकड़े लगभग सामान्य अथवा सम्भावना के अन्तर्गत पाये गये अतः ग्रामीण किशोरी एवं ग्रामीण अभिभावको की समस्याओं का स्वरूप अधिक रूपान्तिरित नही है अतः शोध को प्रथम ग्रुप में सभी आकड़े लगभग सार्थक है।[10] (अथवा) इनका महत्व निर्धारित होता हैं।[11]

ग्रुप 2, में (2, 4) के सभी समस्याओं के सामंजस्य का तुलनात्मक अध्ययन करके उनका t –test परीक्षण और आकडों की संख्या प्राप्त की जायेगी।

T – Test Group = Group all (2, 4)

(2) शहरी अभिभावक

तुलनात्मक = सामान्य, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याये

(4) शहरी किशोरियॉ

सामाजिक समस्याओं का मानक (Criteria) = CI(.9500) सत्यता का मानक।

पुनः ग्रुप का t-test परीक्षण करने में निधारित आकड़ो की लगभग सामान्य अथवा सम्भावना (मापन) के अन्तर्गत पाये गये इससे सिद्ध होता है कि आकडो में सार्थकता पायी गयी जिसका महत्व वास्तव मं निश्चित है।

सारणी 1 सामान्य समस्या के आंकड़े एवं निष्कर्ष

समूह		संख्या N (चर)	कुल संख्या	समस्या स्तर	मध्यमान (M)	मानक विचलन	Frequency (F)	सार्थकता Signiticant	सार्थकता मूल्य Signitican t value
ग्रामीण अभिभावक	G_1	75	300	सामान्य समस्या स्तर	5.3333	1.31861			
शहरी अभिभावक	G_2	75			5.1867	1.06153	6.148	.000	.01
ग्रामीण किशोरी	G_3	75			5.8800	1.27300			
शहरी किशोरी	G_4	75			5.1200	1.15032			

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -6, ISSUE-2, November - 2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सारणी 1 – सामान्य समस्या

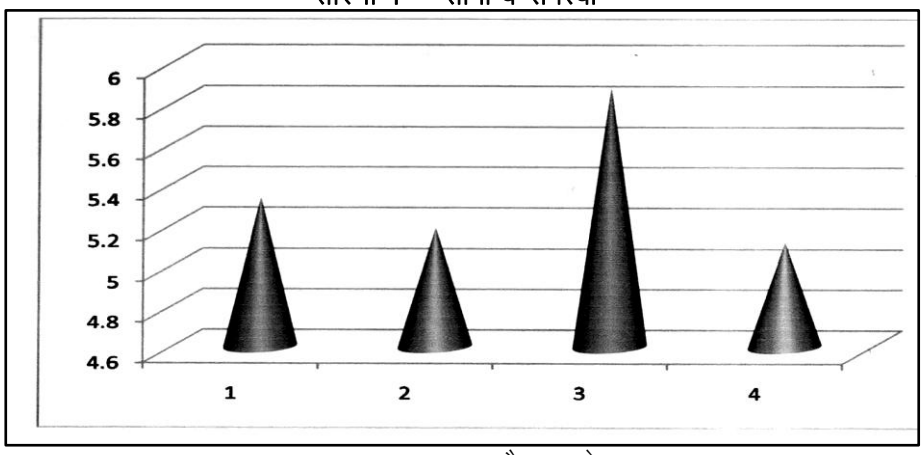

निष्कर्ष 1

सामान्य समस्या का परिणाम सभी समूहो को एक समान निहित करता है जिसके कुल चर 300 है तथा प्रत्येक समूह के लिए 75–75 संख्या निर्धारित है। अतः इसकी सत्यता के लिए SPSS-16 test (special packet for social science verbsion-16) का प्रयोग किया गया है। इसके साथ t-test, chi-squire test frequency test का प्रयोग एवं Anya test का प्रयोग करके सत्यता की गणना कि गयी है। जिसके मध्यमान (M)& मानक विचलन (SD) से प्राप्त Fraquency परिणाम 6.148 और सार्थकता (.000) प्राप्त हुआ जिसका मानक मान (.01) होता है। अतः निष्कर्ष परिणाम सत्य पाया गया। जो सत्य सिद्ध होता है।

सारणी 2
पारिवारिक समस्या के आंकड़े एवं निष्कर्ष

समूह		संख्या N (चर)	कुल संख्या	समस्या स्तर	मध्यमान (M)	मानक विचलन	Frequency (F)	सार्थकता Signiticant	सार्थकता मूल्य Signiticant value
ग्रामीण अभिभावक	G_1	75	300	पारिवारिक समस्या स्तर	6.2933	1.2496	9.066	.000	.01
शहरी अभिभावक	G_2	75			6.4133	1.1281			
ग्रामीण किशोरी	G_3	75			7.0400	1.1559			
शहरी किशोरी	G_4	75			7.1200	1.3250			

सरणी 2
पारिवारिक समस्या (चार्ट) नं0 2

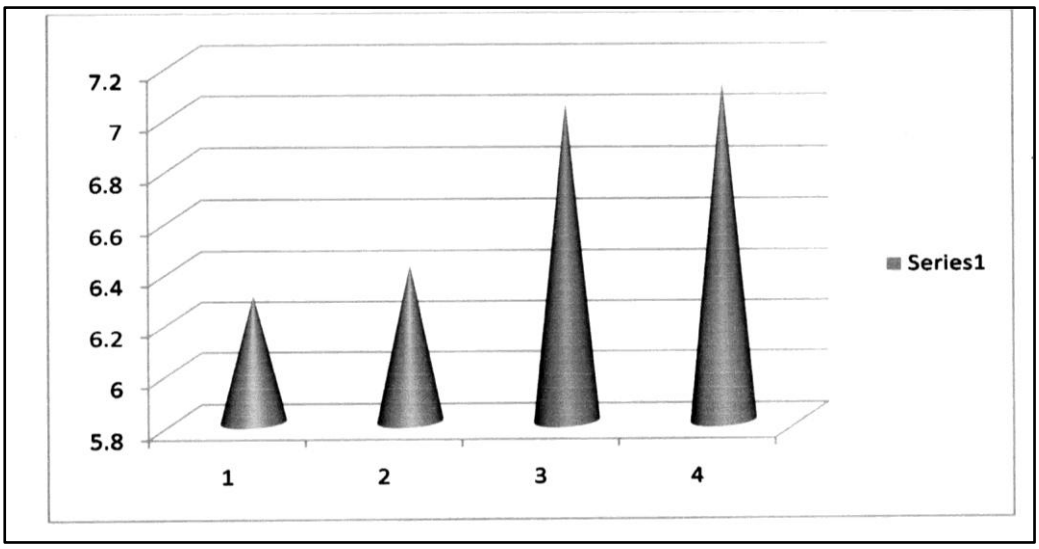

निष्कर्ष 2

पारिवारिक समस्या का परिणाम सभी समूहो को एक समान निहित करता है जिसके कुल चर 300 है तथा प्रत्येक समूह के लिए 75–75 संख्या निर्धारित है। अतः पारिवारिक समस्या गणना की सत्यता निकालने के लिए शोधकत्री ने अनेक परीक्षण किये, जिसमें SPSS-16 test (special packet for social science version-16) के साथ t-test, frequency test & chi-squire test anoya test का

प्रयोग करके सत्यता की गणना कि गयी है। उपरोक्त आकड़ो का मध्यमान (M) & मानक विचलन (SD) से प्राप्त Fraquency परिणाम 9.066 और सार्थकता (significant) . 000 प्राप्त होता है जिसका मानक मूल्य (.01) होता है। अतः यह मूल्य परीक्षण को सत्य साबित करता है आंकड़ो में विश्वस्वनीयता पायी गयी है जो सत्य सिद्ध होता है।

सारणी 3

सामाजिक समस्या के आंकड़े एवं निष्कर्ष

समूह		संख्या N (चर)	कुल संख्या	समस्या स्तर	मध्यमान (M)	मानक विचलन	Frequency (F)	सार्थकत Signiticant	सार्थकता मूल्य Signiticant value
ग्रामीण अभिभावक	G_1	75	300	सामाजिक समस्या स्तर	5.6133	.49027	3.184	.024	.05
शहरी अभिभावक	G_2	75			5.8267	.38108			
ग्रामीण किशोरी	G_3	75			5.6933	.46421			
शहरी किशोरी	G_4	75			5.7600	.42996			

सारणी चार्ट नं0 3 सामाजिक समस्या

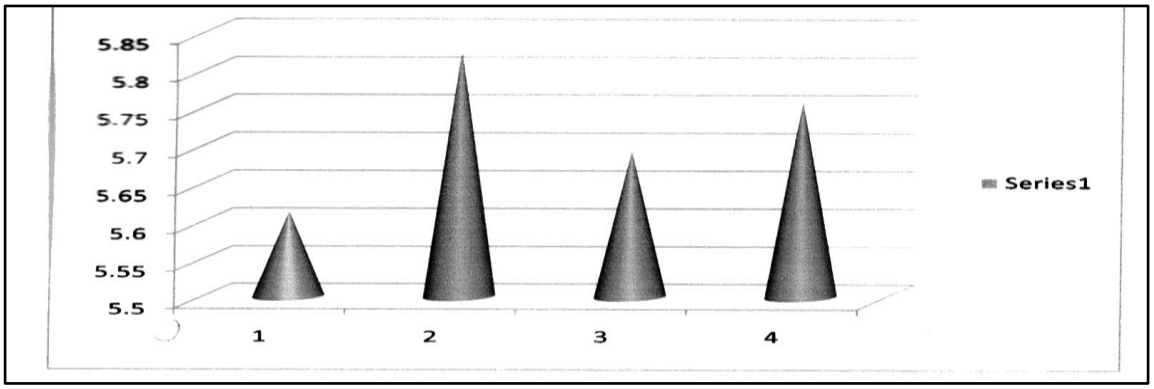

निष्कर्ष 3

सामाजिक समस्या का परिणाम सभी समूहो को एक समान निहित करता है जिसके कुल चर 300 है तथा प्रत्येक समूह के लिए 75–75 संख्या निर्धारित है। अतः पारिवारिक समस्या गणना की सत्यता निकालने के लिए शोधकत्री ने अनेक परीक्षण किये, जिसमें SPSS-16 test (special packet for social science version-16) के साथ t-test, frequency test & chi-squire test&anoya test का प्रयोग करके सत्यता की गणना कि गयी है। उपरोक्त आकड़ो का मध्यमान (M) & मानक विचलन (SD) से प्राप्त Fraquency परिणाम 3.184 और सार्थकता (significant) . 024 प्राप्त होता है जिसका मानक मूल्य (.05) होता है। अतः यह मूल्य परीक्षण को सत्य साबित करता है आकड़ो में विश्वस्वनीयता पायी गयी है जो सत्य सिद्ध होता है।

मूल्यांकन

पीढ़ी अन्तरालगत संघर्ष के अर्न्तगत पायी जाने वाली समस्याओं का तथ्यात्मक सत्यता की जाँच मूलरूप से रायबरेली जिले के अन्तरिक रूप में किशोरियों और अभिभावकों के सामाजिक एवं परिवारिक जीवन का स्वरूप है शोधपत्र की सभी इकाइयों का परीक्षण करने के बाद परिवार एव समाज में व्याप्त शोषण को तत्थात्मक रूप में प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ो को एकृत्र किया गया है इसके बाद सामाजिक पारिवारिक एवं सामान्य समस्याओं को मध्यमान, मानक विचलन को मानकर उन्हे Chi-squire test, t- tset के माध्यम से सत्यता को प्राप्त किया गया है[11] इस प्रकार रायेबरेली जिले की किशोरियों और अभिभावको की एक छोटी इकाई का परीक्षण करके वहा की सामाजिक किशोरी, अभिभावको की मानसिक स्थिति का पीढ़ी अन्तरालगत समस्यात्मक जीवन का उद्देश्य प्राप्त हो सका।

भावी शोध हेतु परामर्श

इस शोध अध्ययन के माध्यम से सर्वे के समय आने वाली कमियों को सुधार कर उन्हे सरलीकरण बनाया जा सकता है इसके उपर्युक्त अन्य क्षेत्रो व विषयों में शोध किया जा सकता है।

1. रायबरेली जिले की किशोरियों के आत्मिक विकास का भावी शोध।
2. रायबरेली जिले के अभिभावको की सामाजिक शिक्षा में भावी शोध किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तुलसी पटेल (सम्पादक) : लेख कार्ल सी जिम्मर मैन "भारत में परिवार की प्रकृति पेज नं0 37 रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली 2011*
2. *डॉ0 सिंह रामपाल : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यकीय–अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–7 संस्करण 2007–8*
3. *गुप्त. एस. पी. – सांख्यकीय विधियॉ – शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद संस्करण 2002*
4. *डॉ0 चौबे, सरयु प्रसाद – शिक्षा के सामाजशास्त्री आधार – श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 2 2012*
5. *एस विजय – स्नातक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के अध्ययतन – आदत एवं समायोजन का तुल्नात्मक अध्ययन– भारतीय शोध संस्थान नई दिल्ली जुलाई–दिसम्बर 2007*

6. *पाठक आर. पी.– भारतीय परमपरा में शैक्षिक चिन्तन शिक्षक – कनिष्ट पब्लिकेशन नई दिल्ली 2008*
7. *पाठक आर. पी. – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें– प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा 1974*
8. *वर्मा कल्पना – अभिभावक शिक्षा अभिभावक व्यवहार पारिवारिक सामाजिक आर्थिक स्तर में उच्च स्तर के बच्चों के सृजनात्मक का अध्ययन लद्यु शोध प्रबन्ध शिक्षा शास्त्र विभाग – लखनऊ वि0 वि0 लखनऊ*
9. *महाजन धर्मवीर एवं महाजन कमलेश–सामाजिक अनुसंधान का प्रणाली विज्ञान–विवेक प्रकाशन नई दिल्ली 2004*
10. *Chauhan, U–Adjustmental problem of high and low achievers doctoral dissertation Kerla University.*
11. *Kalwadkar, V – a study of gifted children in relation to their personality variable level of adjustment and scholastic achievement. Ph. D Home Science, Nagpur University 5th serve of educational research NCERT. New Delhi.*